अध्याय पंचम

5 वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति एवं प्रयोग

5.1 नेवारी संगीतज्ञों का साक्षात्कार

5.2 जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता

5.3 प्रचलित नेवारी गीतों की स्वरलिपियाँ

पंचम अध्याय :- वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति एवं प्रयोग

समय के मुताबिक इस सृष्टि में हर कार्य परिवर्तनशील होता है। ऐसे परिवर्तनशील समय अनुरूप नेपाल की नेवारी जाति द्वारा गाया बजाया जाने वाला नेवारी संगीत वर्तमान स्वरूप में आते आते कई परिवर्तन स्पष्ट कर रहा है। नेवारी संगीत की प्राचीन काल की बात करे तो ईसा पूर्व नेपाल में नेवारी जाति का निवास रहा है ऐसा विद्वानों का मानना हैं। विशाल देश चीन और भारत के बीच में व्यापारिक सम्बन्ध को जोड़ने का काम नेपाल उपत्यका का मार्ग बना। इस दौरान दोनों देश के लोग आने जाने के क्रम में उपत्यका में धीरे-धीरे उसी समाज में घुलमिल होकर रहने लगे। इसी कारण उपत्यका में चली आ रही परंपरा, संस्कृति, संगीत आदि में अवश्य ही उतारचढ़ाव आया होगा। इतिहासकारों के अनुसार सब से पहले गोपालवंशी से लेकर महिषपाल फिर किरात काल और उसके बाद मल्लकाल फिर शाहकाल, राणाकाल फिर से शाहाकाल और अभी वर्तमान समय में गणतन्त्र शासन में आते आते नेवारी संगीत के स्वरूप में भाषा, शैली इत्यादि प्रस्तुतीकरण में नवीनता अवश्य देखने को मिलती है। हालांकी प्राचीन समय से चली आ रही नेवारी मुख्य गायन शैली दाफा भजन, परंपरागत वाद्य वादन, तथा नृत्य की रोचक प्रस्तुतियाँ अभी भी देखने सुनने को मिलती हैं परंतु इन शैली में भी परिवर्तित स्वरूप अवश्य ही पाया जा सकता है। यही कला कौशल, परम्परागत संस्कृति एवं संगीतकला वर्तमान समय में भी नई पीढ़ी में किस तरह समाया हुआ है, वे अपने कला संगीत को विस्तार करने में किस प्रकार के प्रयास कर रहे हैं और कितना रुचि दे पारहे हैं, इस तरह की जानकारी के लिए शोधार्थिनी द्वारा वर्तमान समय में नेपाल उपत्यका काठमांडू, ललितपुर एवं भक्तपुर जिलों में इस प्रकार जानकारी को इकठ्ठा करने की कोशिस की है:

5.1 नेवारी संगीतज्ञों का साक्षात्कार

5.2 जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता

5.3 प्रचलित नेवारी गीतों की स्वरलिपियाँ

5.1 नेवारी संगीतज्ञों का सक्षात्कार :

नेपाल का नेवारी संगीत एक प्रचलित लोक संगीत प्रकार है। विभिन्न संगीतज्ञों के अनुसार नेवारी संगीत की शुरुवात प्राचीन समय से चली आ रही है जो वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रख्यात रूप में सुन सकते है और देख सकते हैं। इस संगीत परंपरा को निरंतर स्वरूप देने में मौखिक शिक्षण को अपनाया गया है। संभवतः इसी कारण से इस विषय पर लिखित रूप में अत्यंत कम मात्रा में जानकारी उपलब्ध है। इसी को मध्यनज़र रखते हुए प्रस्तुत अध्याय में नेवारी संगीत से जुड़े हुए कलाकारों जिनका नेवारी संगीत से प्रत्यक्ष संबंध है, ऐसे कलाकारों से प्राचीन एवं पारंपरिक मौखिक परम्परा और उनकी वर्तमान समय में क्या स्थिति है, इस संगीत का क्या भविष्य है इत्यादि विषय पर चर्चा एवं परिचर्चा की गयी है। नेपाल उपत्यका के विभिन्न कलाकार, दाफा गुरु, वाद्य गुरु, लोक गायक, अनुसंधानकर्ता इत्यादि से लिया गया साक्षात्कार का विस्तृत रूप निम्नलिखित है:

वरिष्ठ वाद्य वादक – 'न्हुंच्छे बहादुर दंगोल'

प्रश्न : आपका परिचय ?

उत्तर : मैं प्रो. न्हुंच्छे बहादुर डंगोल। मेरा जन्म वि. सं. 2005 में काठमांडू जिला त्यौड टोल में हुआ है।

प्रश्न : आप ने कब से नेवारी संगीत सीखना शुरू किया ?

उत्तर : मेरे दादा और पिता दाफा संगीत के गुरु थे। घर का वातावरण हमेशा संगीतमय होता था। इसलिए मैने बहुत छोटी उमर में ही अपने पिता से नेवारी संगीत गाना तथा बजाना सीखना शुरू किया था।

प्रश्न : संगीत प्रस्तुति कब से प्रारम्भ की ?

उत्तर : मैं बचपन से अपने पिता के साथ दाफा भजन समूह में जाता था। पिता के साथ हरेक कार्यक्रम में जाता था और अपनी प्रस्तुति भी देता था। मुझे लगता है मैंने वि. सं. 2008 साल से ही सांगीतिक कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देना शुरू की थी। उन प्रस्तुतियों में वाद्य वादन के साथ साथ गायन, नृत्य और नाटक में भी प्रस्तुति देता था। मैंने बचपन से ही छोटे और बढ़ा मंच पर कार्यक्रम किए जैसे वि. सं. 2013 में पहली बार श्री ५ महाराजधिराज महेन्द्रवीरविक्रम शाह के राज्याभिषेक के अवसर में आयोजित सभा में नेवारी नाटक 'कङ्गा' में नेवारी संगीत जगत के वरिष्ठ कवि दुर्गालाल श्रेष्ठ एवं नेवारी लोक गायक भृगुराम श्रेष्ठ के साथ मिलकर नृत्य एवं नाटक प्रस्तुत किया था।

प्रश्न : आप नेवारी वाद्य का वरिष्ठ वादक हैं इसलिय नेवारी संगीत के दाफा संगीत के बारे में क्या कहेंगे ?

उत्तर : दाफा संगीत प्राचीन समय से प्रचलित नेवारी संगीत में ईश्वर की प्रार्थना के रूप में गाई जाने वाली गायन शैली है। यह भक्ति रस प्रधान गायन है। मुझे इस संगीत के साथ जुड़े रहने में सुकून मिलता है। दाफा संगीत नेवारी संगीत को पहचान दिलाने वाला मुख्य संगीत मान सकते है।

प्रश्न : दाफा संगीत की प्रचलन कब से हुआ ?

उत्तर : दाफा संगीत की प्रचलन के बारे में यकीनन तो नहीं कह सकता परंतु विभिन्न विद्वानों के मतानुसार इस संगीत की ब्यापकता मध्य काल के मल्ल शासन काल से मानी गयी है। अगर वर्तमान समय में दाफा समूह में गाई जाने वाली भजन के पदों को देखा जाए तो उसमे मल्ल राजाओं का नाम एवं वर्ष उल्लेखित मिलता है। इस आधार पर हम अनुमान कर सकते है कि दाफा संगीत की तीव्रता मल्ल काल ही होनी चाहिए।

प्रश्न : दाफा संगीत में क्या गाया जाता है ?

उत्तर : दाफा संगीत एक भक्ति संगीत है जिसमें शास्त्रीय राग में निबद्ध भजन को गया जाता है। इसके अलावा बारहमासा गीत भी गाया जाता है। बारहमासे गीत के अंतर्गत प्रत्यक ऋतु के अनुसार अलग अलग धुन में अलग अलग पद गाए जाते है। दाफा संगीत का शुरुवाती महीना गुंला माना जाता है जो श्रावण महीने में पड़ता है। इस महीने से दाफा संगीत में हरेक महीना ऋतु एवं चाडपर्व जात्रा के अनुसार दाफा गीत गाया जाता है।

प्रश्न : दाफा संगीत में किन वाद्यों का प्रयोग किया जाता है ?

उत्तर : इस संगीत में मुख्य रूप से खिं, तिनछुक, ख्वालमली, पोंगा इत्यादि वाद्य का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान समय में हारमोनियम, कीबोर्ड, भ्वायोलिन आदि वाद्यों का भी समावेश करने लगे हैं।

प्रश्न : नेवारी जनजीवन में वाद्य का महत्व कितना है ?

उत्तर : नेवारी जाति के हरेक संस्कार में संगीत समाया हुआ है जैसे जन्म से लेकर मृत्यु पर्यान्त संगीत से जुड़ा होता है। अगर किसी के घर में शंक बजाया जाए तो पूजा कार्य को दर्शाता है। अगर नेवारी नाय् खिं और काँ वाद्य बजाते है तो किसी के देहान्त की घटना जानते है। मंदिर में नित्य पूजा वाद्य वादन के साथ की जाती है जिस्से हमे दुर होते हुए भी पूजा के समय का भान हो जाता है। प्राचीन काल से लेकर अभी

भी नगर में कोई मुख्य सूचना देनी हो तो नाय् खीं वाद्य का प्रयोग किया जाता है जिस्से नगरवासीयों को सूचना मिलती है। इस तरह अन्य कई संस्कार में नेवारी वाद्यों की अहम भूमिका है।

प्रश्न : नेवारी संगीत के उत्थान के लिए अब तक आपका क्या प्रयास रहा है ?

उत्तर : मैंने बचपन से ही नेवारी संगीत सीखकर अपना प्रस्तुति देना शूरु किया था। उसी क्रम में वि. सं. 2029 में मैंने अध्यापक के रूप में त्रिभुवन विश्व-विध्यालय अंतर्गत पद्यमकन्या क्याम्पस में लोक गीत विषय सिखाना शुरू किया। नेवारी संगीत की उत्थान और प्रचार-प्रसार हेतु देश विदेश में जाकर अपनी प्रस्तुति एवं विदेशियों को तालीम देने का कार्य कर रहा हूँ। मैंने अभी तक पच्चीस देशों में अपनी प्रस्तुति दी हैं। अपने देश में नेवारी संगीत के उत्थान के लिए सन 2018 से विभिन्न विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नेवारी संगीत की शिक्षा प्रारम्भ की है, जिसमें शास्त्रिय और क्रियात्मक संगीत दोनों सिखाया जाता है।

प्रश्न : आप बचपन से राजदरबार से जुड़े थे, तो आपके अनुभव के अनुसार क्या दरबार में नेवारी संगीत को प्राथमिकता दी जाती थी ?

उत्तर : मैं जहा तक जानता हूँ कि मध्यकाल के बाद शाह तथा राणाकाल के समय था। राणाकालीन राज्य समय में भारत से संगीतज्ञों को बुलाकर शास्त्रीय संगीत कि प्रस्तुतियों को ज्यादा महत्व देने लगे। फिर जब राणाकालीन समय समाप्त होकर पुनः शाह काल आया जिसमे त्रिभुवन वीरविक्रम शाह राजा थे, उनके समय से दरबार में शास्त्रीय संगीत के साथ साथ नेपाली जनजातियों के संगीत को भी महत्व दिया जाने लगा। दरबार की पुजा विधि में नेवारी समूह को वाद्य वादन बजाने के लिए विशेष निमंत्रण किया जाता था। नेवारी संगीत के अंतर्गत भैरव नृत्य, विभिन्न नेवा नाटक, गीत-संगीत इत्यादि के कार्यक्रम भी होते थे। यह परम्परा वीरेन्द्र वीरविक्रम शाह काल वि. सं. 2058 तक निरंतर चली। इस तरह मध्यकाल के मल्ल शासन के बाद शाह राज्य काल में भी नेवारी संगीत को स्थान एवं सम्मान दिया गया।

प्रश्न : नेवारी संगीत की उठान के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?

उत्तर : नेवारी संगीत केवल नेपाल में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैलना शुरू हो गया है। इसलिए कई देश जैसे जर्मन, फ़्रांस, इंग्लैंड, स्विडेन आदि के लोग यहां आकार नेवारी संगीत, कला एवं संस्कृति विषय में शोध एवं अनुसंधान करके गए हैं। अनेक विदेशी लोग नेवारी भाषा एवं वाद्य वादन का आध्ययन करके गए हैं। यह हमारे लिए सम्मान एवं गौरव की बात है। इस गौरव को भावी पीढ़ियों तक पाहूंचाने के लिए एवं देश की संस्कृति परंपरा को मजबूत करने के लिए केवल स्थानीय समुदाय ही नहीं बल्कि नेपाल सरकार की तरफ से भी भरपूर और निरंतर साथ देना होगा। पर्येटकीय क्षेत्र नेपाल में सभी जातियों की

कला एवं संगीत परंपरा कायम होने से देश की आर्थिक स्मृद्धि भी सम्भव होगी। इसलिए नेवारी संगीत की विभिन्न विधाओं पर शोध अनुसंधान एवं उचित विचारों से इसकी सहमति बनानी होगी। 'प्राचीन काल से केवल मौखिक रूप में सिखाया गया' इस प्रचलन को गुरुओं द्वारा मिलकर लिखित रूप देकर सिखाने का प्रचलन करना होगा। वर्तमान पीढ़ियों को इस संगीत के प्रति प्रोत्साहन देकर शिक्षा देनी चाहिए। विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में लोक संगीत को प्राथमिकता देकर पाठ्यक्रम बनाना होगा। तब जाके हमारी देश की नेवारी संगीत परंपरा का भविष्य सुनिश्चित करने में मदद होगी।

राष्ट्रीय जनवादी कलाकार – ' राम कृष्ण दुवाल '

प्रश्न : आपका परिचय ?

उत्तर : मैं राम कृष्ण दुवाल। मेरा जन्म स्थान काठमांडू कीर्तिपुर पाँगा है। जनमानस में मुझे राष्ट्रीय जनवादी कलाकार के रूप में जानते है।

प्रश्न : नेवारी संगीत के विषय में क्या कहेंगे ?

उत्तर : नेवारी संगीत नेवारी जाति की पहचान है, गौरव है और इस जाति के लिए वरदान स्वरूप है, क्योंकि नेवारी संगीत के जरिए केवल नेपाल में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी अलग पहचान बनाने की क्षमता इस संगीत में है। नेवारी जाति की संगीत परम्परा एवं संस्कृति ही नेवारी जाति का दर्पण है।

प्रश्न : नेवारी संगीत कब से शुरू हुआ है ?

उत्तर : मेरा अध्ययन और खोज अनुसार नेवारी संगीत की उत्पत्ति नेपाल के गोपालवंश के शासन काल से मान सकते है। उसके बाद यकीन के साथ कह सकते है कि मध्यकाल के मल्ल शासन समय में नेवारी संगीत का प्रचार प्रसार एवं साधना जोड़ तोड़ के साथ हुई है। मल्ल काल को नेवारी संगीत एवं संस्कृति तथा अन्य चीजों के लिए स्वर्णिम युग कहा गया है। मैं भी इसी बात से सहमत हूँ क्योंकि उस स्वर्णिम युग के कारण ही वर्तमान समय तक हम जो जितना कर पारहे है उसी की बदौलत है।

प्रश्न : नेवारी संगीत और दबली(मंच) का क्या संबंध है ?

उत्तर : दबली वह स्थान है जहां नेवारी गीत, वादन, नृत्य तथा नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं। नेवारी संगीत परम्परा को कायम रखने के लिए जिस तरह गुरु शिष्य परम्परा में शिक्षा दी जाती है उसी तरह कला प्रस्तुति करने के लिए हरेक नेवारी पुरानी बस्तियों के मुख्य मुख्य स्थानों में दबली बनी होती है। मेरे विचार

में दबली का निर्माण मल्ल काल में हुआ होगा। दबली मञ्च है जो जमीन की सतह से एक या दो मिटर ऊंचा होता है। इसका आकार चार कोने का होता है। दबली का सीधा संबंध नेवारी संगीत परम्परा, संस्कृति तथा कला के साथ जुड़ा होता है। कला को सीखने के साथ साथ प्रदर्शन करना भी नितांत आवश्यक होता है इसीलिय नेवारी समाज में दबली का निर्माण किया गया होगा।

प्रश्न : नेवारी संगीत का प्रशिक्षण किस तरह किया जाता है ?

उत्तर : नेवारी संगीत का प्रशिक्षण प्राचीन काल से ही मौखिक रूप में चला आ रहा है परंतु वर्तमान समय में कुछ कुछ स्थानों में लिखित रूप में भी सीखाना शुरू किया है जो बहुत अच्छी बात है। परंतु धार्मिक विश्वास और आस्था के कारण गुरु अपने शिष्य के अलावा अन्य लोगों को बताने में रुचि नहीं रखते हैं। यह बात ज़्यादातर वाद्य वादन में होती है। नेवारी संगीत में अत्यंत प्रचलित अवनद्य वाद्य नाय् खिं है जो मृतक शव को अंतिम यात्रा में ले जाते समय बजाया जाता है। इस समय बजाया जाने वाले नाय् खिं बोल को घर में नहीं बल्कि शव यात्रा के समय ही गुप्त रूप में गुरु अपने शिष्य को सिखाते हैं। इस तरह नेवारी वाद्यों का प्रशिक्षण घर में तथा बहार चलते चलते भी सिखाने की परम्परा है।

नेवा: देय् दबू के वाद्य प्रशिक्षक – 'शेष नारायण महर्जन'

प्रश्न : आपका परिचय ?

उत्तर : मैं शेष नारायण महर्जन काठमांडू महा-नगरपालिका वडा नं. 16 नयाँबजार में निवास करता हूँ। मैं 'नेवाः देय् दबू' तथा अन्य विभिन्न स्थान के संस्था में वाद्य प्रशिक्षण के रूप में काम करता हूँ।

प्रश्न : आप वाद्य प्रशिक्षण के साथ साथ अन्य किस कार्य में संलग्न है ?

उत्तर : मैं विभिन्न स्थान में नेवारी परंपरागत वाद्य जैसे पछिमा, धिमे, बांसुरी इत्यादि सिखाता हूँ। इसके अलावा गाना सिखाना, गाना में संगीत देना और गायन भी करता हूँ।

प्रश्न : वाद्य गुरु के नाते विभिन्न प्रचलित नेवारी वाद्यों में से किस वाद्य को प्रमुख वाद्य मान सकते है ?

उत्तर : मेरे विचार में विभिन्न गुरु के कथ्यों से, सुने हुए आख्यानों से, 'धिमे' वाद्य को प्राचीन और मुख्य वाद्य के रूप में मान सकते है। इस वाद्य का मुख्य वादक नेवारी जाति के महर्जन लोग जिसे 'ज्यापू' नाम से जाना जाता है। बुजुर्क लोग से सुनने में आता है कि प्राचीन समय से ही नेपाल उपत्यका में नेवार जाति रहते थे और वह लोग खेत में काम करके जीवन-यापन करते थे। उस समय नकारात्मक ऊर्जा के कारण

अपनी दिनचर्या में बाधा होती थी इसलिय धिमे वाद्य का आविष्कार किया गया होगा। इस वाद्य की ध्वनि बहुत बडी होती है और साथ में भुस्या(घन वाद्य) वाद्य भी बजाया जाता है। जिसे बजाकर नकारात्मक उर्जा को भगाने के लिए मदद मिलती होगी। तब से यह वाद्य प्रचलन में आया ऐसा मानते है। यह वाद्य सुनने में से मन में उत्साह, उमंग का अनुभव होता है।

प्रश्न : क्या आपने वाद्य के संबंधित पुस्तक भी प्रकाशन किया है ?

उत्तर : जी मैंने वाद्य तथा दाफा गीत संबंधित पुस्तक प्रकाशन किया है जैसे

1 परंपरागत पुखुद्य त्वा: या दाफा म्ये सफू

2 चिग्व: धिमेया बोल सफू

3 पछिमा बोल लिपिया सफू

4 तग्व: धिमे बोल लिपि

5 खिंया बोल

6 बांसुरी स्वरलिपिया भाग 1,2,3 और 4

प्रश्न : हरेक नेवारी संगीत समूह में क्या क्या समानता और विभिन्नता पाए जाते है ?

उत्तर : नेवारी संगीत समूह अर्थात दाफा समूह तथा विभिन्न प्रकार के समूह आते है। सभी समूह में सर्वप्रथम नासः द्य(भगवान) की आराधना से ही गायन तथा वादन का आरम्भ किया जाता है। और अन्त में भी उन्ही को प्रार्थना करके सम्पन्न किया जाता है। दाफा गुरु को उच्च पद एवं सम्मान के साथ मानते हैं। दाफा की पुस्तके प्राचीन समय से चली आ रही हैं वही से गीत लेकर गायन करते हैं। परंतु विभिन्नता को देखे तो हरेक स्थान के दाफा गीत की पदें, राग की नाम, ताल के बोल एवं विस्तार तरीका, बजने का ढंग कम ज्यादा रूप में भिन्न पाया गया है। इस का मुख्य कारण शायद गुरु के सिखाने का तरीका भिन्न भिन्न हो सकता है। परंपरागत रूप में चली आ रही मौखिक तरीका के कारण पदों में या गाने में अंतर आया हो ऐसा मान सकते है। सम्पूर्ण दाफा संगीत में प्राय: सात ताल प्रमुख रूप में प्रयोग किया हुआ देख सकते है परंतु उसके भी बोल, स्थान अनुसार भिन्न पाए गए है।

नेपाली संस्कृति एवं अनुभवी पारखी विद्वान, अन्वेषक एवं लेखक –

'गणेशराम लाछि'

प्रश्न : आप का परिचय ?

उत्तर : मैं गणेशरम लाछि, मध्यपुर ठिमी में रहता हूँ। मुझे अपनी सांस्कृतिक सम्पदा के विषय में लेख लिखना पसंद है इसलिए लोग मुझे लेखक के रूप में जानते है।

प्रश्न : आप नेवारी संगीत को किस तरह ब्याख्या करेंगे ?

उत्तर : विश्व में संगीत अलग अलग प्रकार एवं ढंग से चलते आए हैं। संगीत की उत्पत्ति एवं उसकी विस्तार निश्चित ही कहीं न कहीं एक स्थान से शुरू हुआ होगा। हमारे देश नेपाल में भी संगीत को अपने तरीके से अपनाया होगा। नेपाल में प्रवेश किया हुआ संगीत नेवारी जनजाति ने भी प्राचीन समय से अपने परंपरा, रीतिरिवाज इत्यादि अपने ही तौर तरिके से विकास करते गए होंगे और अभी भी इस संगीत की निरंतरता है, जो सम्पूर्ण नेपाल में पहचान के रूप में हमारे साथ मौजूद है।

प्रश्न : नेवारी संगीत का मुख्य गायन कौन सा है ?

उत्तर : नेवारी संगीत में मुख्य गायन प्राचीन समय से चली आ रही शास्त्रीय राग एवं ताल में निबद्ध 'दाफा गायन' ही है। दाफा गायन केवल एक प्रकार का गायन ही नहीं बल्कि पूरे नेवारी समाज की गतिविधियां एवं संस्कार का दर्पण है।

प्रश्न : दाफा संगीत में गुरु की भूमिका क्या-क्या होती है ?

उत्तर : दाफा संगीत में गुरु की भूमिका उच्च मानी जाती है। सम्पूर्ण दाफा गायन तथा वादन को सिखाना, प्रस्तुति के समय सम्पूर्ण रूप में ज़िम्मेदारी लेने के साथ साथ सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। समाज में दाफा गुरु को उच्च स्थान दिया जाता है। मुझे लगता है की आज से बीस तीस वर्ष पहले तक दाफा गुरुओं को सामाजिक जनजीवन के नीतिनियमों के निर्णय, समाज में हुए कोई वादविवाद को सुलझाने इत्यादि कार्यों में मुख्य सहभागी के रूप में बुलाया जाता था। दाफा गुरु द्वारा किए गए निर्णय को उच्च मान्यता दिया जाता था परंतु वर्तमान समय में यह परंपरा कम होने लगी है। इतना ही नहीं दाफा समूह के सदस्य कुछ दुसरे सांगीतिक कार्यक्रम जैसे नृत्य प्रस्तुति, आर्थिक एवं श्रम का सहयोग देने में भी तत्पर होते थे। श्रम इस प्रकार की है कि नेवारी जाति का मुख्य पेशा ब्यापार एवं खेती है इसलिए अन्न बाली की खेती के समय दाफा समूह खेती में संलग्न ब्यक्तियों की श्रम में मदद करते थे। इन सभी कार्यों

को ब्यवस्थित रूप में करने का काम भी गुरु ही करते हैं। इसलिए दाफा संगीत में गुरु को श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रश्न : वर्तमान समय में दाफा संगीत प्रति युवाओं की रुचि कितनी है ?

उत्तर : पहले के तुलना में वर्तमान समय में दाफा संगीत प्रति युवाओं के रुचि घटती हुई नज़र आती है। इस का मुख्य कारण युवाओं में पश्चिमी संगीत का प्रभाव ज्यादा बढ्ने लगा है। अपने परंपरागत संगीत के महत्व को कम समझना और युवाओं की रुचि के अनुसार नवीन ढंग अपनाकर सिखाने की प्रविधि का अभाव भी हो सकता है।

प्रश्न : नई पीढ़ी को किस तरह दाफा संगीत प्रति आकर्षित कर सकते है जिस्से इस संगीत का संरक्षण हो सके ?

उत्तर : सर्वप्रथम नई पीढ़ी को सीखाने से पहले नेवारी संगीत में जुड़े हुए गायक तथा वादकों को उचित निकाय से उनकी कार्य को सम्मान करे और आर्थिक रूप में सहयोग करने की व्यवस्था बनाएं। आर्थिक सहयोग इस कारण कि प्राचीन काल में कई दाफा समूह को जमीन दिया हुआ है तो कई को नहीं। अब की स्थिति में ऐसा है कि उन संस्था को संचालन के लिए पहले दी गई जमीन को छीन लिया गया। इसलिए उचित निकायों से अपनी कला, संस्कृति के उत्थान एवं संरक्षण के लिए आर्थिक कोष बनाना और वार्षिक बजेट की व्यवस्थापना करनी चाहिए। इस के बाद भविष्य तक अपनी संगीत एवं संस्कृति को बचाए रखने के लिए आज के युवाओं को इस संगीत प्रति किस प्रकार रुचि बढ़ा सकते है उन तरीकों से दाफा संगीत का कोर्स बनाना चाहिए। नई प्रविद्धियों को अपनाकर स्कूल, कालेज में कार्यक्रम रखकर इस संगीत के प्रति आकर्षित करसकते हैं। केवल स्थानीय समूह से ही नहीं बल्कि सरकार की ओर से भी इस संगीत को विस्तार करने में मदद करनी होगी जैसे नई पीढ़ीयों को सिखाने के बाद उनकी कला प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की आयोजना करके उनका हौसला बढाना चाहिए। नेपाल पर्यटकीय क्षेत्र है इसलिए अपने देश में आए हुए पर्यटकों के स्वागत के लिए अपने ही मौलिक वाद्य वादन तथा गीत का प्रयोग कर सकते हैं। इस संगीत की खोज एवं अनुसंधान कार्य के लिए संगीत प्रेमियों को हौसला देते रहने से क्रियात्मक पक्ष के साथ साथ इस संगीत का शास्त्रिय पक्ष भी मज़बूत होगा परिणाम स्वरूप नेवारी संगीत को लम्बे समय तक संरक्षण करने में अवश्य ही सहयोग होगा।

प्रश्न : दाफा संगीत की गायकी में विभन्नता के बारे में आप क्या कहेंगे ?

उत्तर : दाफा गायन या बजाने के तरिके में सभी स्थान जैसे कीर्तिपुर, भक्तपुर, ललितपुर, ठिमी आदि नेवारी बस्तियों में थोडी बहुत विभिन्नता जरूर पायी जाती है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि भिन्न भिन्न स्थानों के रहन-सहन, दिनचर्या, बोली- भाषा आदि में अंतर होता है। सिखाने के गुरु अलग होते हैं। परंतु सभी दाफा समूह में जो प्रस्तुति की जाती है उसका एक ही भाव है, भक्तिभाव जो नेवारी समाज को भक्ति रस में जोड़ने का कार्य करता है।

लोकप्रिय संगीतकार एवं गायक – 'गुज्जे मालाकार'

प्रश्न : आप का परिचय ?

उत्तर : मैं गायक तथा संगीतकार गुज्जे मालाकार, कीर्तिपुर काठमांडू में रहता हूँ। मैं विभिन्न संस्था तथा विद्यालय में संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ।

प्रश्न : आप ने किस प्रकार के गीत में संगीत दिया है ?

उत्तर : मैंने कई नेवारी तथा नेपाली गीत में संगीत दिया है जैसे प्रेम गीत, राजनैतिक परिवर्तनशील जनगीत, बाल गीत, भक्तिरस प्रधान गीत इत्यादि।

प्रश्न : नेवारी संगीत ने राजनैतिक परिवर्तन में मदद किया है, किस प्रकार ?

उत्तर : अवस्य ही किया है। मुझे लगता है प्राचीन समय से ही संगीत के जरिए विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन करने का कार्य हुआ होगा। मुझे याद है कि नेपाल में बहुदलीय शासन आने से पहले क्रूर पंचायत काल था। उस समय जो नेताओं ने खुलकर जनता को नहीं बता पाया वह बात संगीत के जरिए जनता को समझाया था। नेवारी तथा नेपाली दोनों प्रकार के जनगीत जनता के मन को छूने में सफल हुए थे। और अव्यवस्थित राजनीति को सुलझाने में सभी को सचेत करके परिवर्तन करने का कार्य किया था। इसलिए नेवारी संगीत प्रकार में से जनगीत प्रकार का भी अलग सा महत्व मान सकते है।

प्रश्न : नेवारी संगीत में कितने प्रकार के गीत गाए जाते हैं ?

उत्तर : नेवारी संगीत में मुख्य तथा प्राचीन संगीत दाफा संगीत, चर्या गीत इत्यादि है जिस में विभिन्न भगवान की आराधना की जाती है। दाफा संगीत के बाद बारह महीने में गाई जाने वाले बरहमासा गीत प्रचलित है जिसमे गुंला, यंला, मालश्री, वसंत, होरी, घातु, सिन्हाज्या इत्यादि गीत गाए जाते हैं। इसके

अलावा नेवारी प्रचलित लोक गीत और वर्तमान समय में प्रचलित फिल्मी तथा एलबम नेवारी गीत इत्यादि प्रकार प्रचलित है।

दाफा गुरु – 'टेक बहादुर डंगोल' (हाडीगाउँ)

प्रश्न : आपका परिचया ?

उत्तर : मैं टेक बहादुर डंगोल, हाडीगाउँ काठमांडू दाफा भजन समूह में दाफा गुरु हूँ।

प्रश्न : हाडीगाउँ में कितने दाफा संगीत समूह है ?

उत्तर : यहाँ पे मुख्य तीन दाफा समूह है जिसमें अलग अलग गुरु हैं।

प्रश्न : दाफा संगीत क्या है ?

उत्तर : दाफा संगीत परापूर्व काल से चली आ रही भक्ति संगीत परम्परा है। इस में गायन करने के पूर्व राग आलाप किया जाता है। सर्वप्रथम गुरु शुरुवात करते हैं और बाकी के लोग दोहोराते हैं। इस प्रकार यह गायन नियम पूर्वक वाद्य वादन के साथ किया जाता है।

प्रश्न : दाफा संगीत गाने के लिए कितने जन होना आवश्यक है ?

उत्तर : दाफा संगीत गाने के लिए कम से कम दश या बारह जन होना आवश्यक है क्योंकि यह समूह गायन है। इस में गायकों के साथ साथ वाद्य वादकों की भी आवश्यक होती है।

प्रश्न : हाडीगाउँ में दाफा भजन की प्रचलन कितनी है ?

उत्तर : यहा पे मुझे लगता है कि पहले की तुलना में दाफा गायन तथा वादन के प्रचलन में कमी होने लगी है। वर्तमान पीढ़ियां अपने अपने काम में व्यस्त रहते हैं। पुराने जितने लोग है वही इस परम्परा को चला रहे है। यह हमारी संगीत की पहचान है इसलिए नई पीढ़ी कों उनकी रुचि के अनुसार सिखाएँगे तो ही इस संगीत का भविष्य बना रहेगा।

प्रश्न : इस संगीत के प्रचलन के बारे में आप क्या जानते है ?

उत्तर : दाफा संगीत की शुरुवात के बारे में तो नहीं पता है परंतु हमारे गुरुजनों का कहना है कि मल्ल काल से प्रचलित गायन शैली है क्योंकि दाफा गायन की रचनाएं देखेंगे तो इस में मल्ल राजाओं के नाम और समय लिखे होते है।

प्रश्न : दाफा गायन में कौन कौन सी भाषा का प्रयोग किया है ?

उत्तर : दाफा रचना में नेवारी, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है। कुछ कुछ रचना में दोनों भाषा मिश्रित भी पायी गयी हैं।

प्रश्न : यहाँ के दाफा संगीत और अन्य स्थानों के दाफा संगीत में क्या अंतर है?

उत्तर : मुझे लगता है दाफा गायन की बात करे तो इस में राग में निबद्ध रचना गायी जाती है। हरेक रचना में अलग अलग राग होता है जिसे हम गवारा और चालिं कहते है। इस में खिं, ताः, बभू और पोंगा वाद्य संगत में प्रयोग करते है। और ताल की बात करे तो मुख्य सात ताल बजाया जाता है। इसी प्रकार अन्य नेवारी बस्ती में भी दाफा तथा भजन गाने की चलन है। इस में केवल हरेक स्थान की ग्वारा गायन की पदों में, राग का नाम और ताल बजाने के तरीका और बोल इत्यादि में अंतर पाया जाता है। क्योंकि हाडीगाउँ के तीन प्रमुख दाफा समूह में ही थोडी बहुत भिन्नता पायी गई है।

प्रश्न : यहाँ के दाफा संगीत संचालन के लिए आर्थिक श्रोत क्या है ?

उत्तर : पहले के समय में दाफा संगीत समूह संचालन करने के लिए जमीन होती थी। परंतु अभी उन जमीन को बेचकर पैसा बैंक में डाला गया है। उसी की ब्याज से इस समूह कों चला रहे हैं परंतु अभी की महंगाई के दृष्टिकोण से केवल ब्याज से चलाना मुस्किल हो गया है। इसलिए दाफा समूह के व्यक्ति मिलकर पैसा जमा कर के भी इस संगीत परम्परा को निरंतरता देने का प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान समय में 'ज्यापू माह गुठी' करके संस्था है। उस संस्था द्वारा वर्ष भर में एक या दो बार आर्थिक सहयोग मिलने लगा है जो सकारात्मक पक्ष है।

प्रश्न : दाफा संगीत उत्थान के लिए कार्यक्रम आयोजना होता है ?

उत्तर : जी कभी कभी कुछ संस्था द्वारा नेवारी संगीत की उत्थान एवं संरक्षण के लिए कार्यक्रम होता है। जैसे 2017 में काठमांडू वसंतपुर में दाफा महोत्सव किया था। जिस में प्राय: सम्पूर्ण नेवारी बस्तियों से अपनी दाफा गायन प्रस्तुति के लिए सहभागी सम्मिलित हुये थे।

'ज्यापू समाज यल' प्रत्रिका का कार्यकारी सम्पादक – 'काजीमन डंगोल'

प्रश्न : आपका परिचय ?

उत्तर : मैं काजीमन डंगोल, ललितपुर इमाडोल में रहता हूँ। हाल 'ज्यापू समाज यल' पत्रिका में कार्यकारी सम्पादक के रूप में कार्यरत हूँ। मैं दाफा भजन में वाद्य वादन भी करता हूँ।

प्रश्न : नेवारी संगीत में मुख्य गायन कौन सी है ?

उत्तर : नेवारी संगीत में प्राचीन समय से जो चली आ रही गायन दाफा संगीत परम्परा है इसलिए दाफा संगीत ही मुख्य एवं आधार गायन शैली माननी चाहिए।

प्रश्न : दाफा संगीत की उत्पत्ति के विषय में क्या कहेंगे ?

उत्तर : विभिन्न विद्वानों के अनुसार आज से दो हजार वर्ष पूर्व ही लिच्छवि काल में दाफा संगीत की शुरुवात मानी गई है परंतु उपलब्ध तथ्य नहीं होने के कारण मल्ल काल में नेवारी संगीत का जिक्र ज्यादा होने से इसी काल का दाफा संगीत का विकास काल माना हुआ है।

प्रश्न : आप दाफा संगीत को किस प्रकार व्याख्या करेंगे ?

उत्तर : सब से पहले तो दाफा शब्द के बारे में मुझे जो लगता है वह बताना चाहूंगा कि नेवारी संगीत में ज़्यादातर वाद्यों का नाम 'द' से है जैसे दबदब, दम: खिं, द्यो खिं इत्यादि। नेवारी भाषा में 'ड' को 'द' उच्चारण किया जाता है। संस्कृत में 'ड' का अर्थ शिव भगवान का प्रतीक मानते है। नेवारी संगीत में नास: द्य(भगवान) को संगीत के पहला गुरु के रूप में पूजते है जो शिव भगवान का ही दूसरा रूप मानते हैं। इस प्रकार द अक्षर से दफा फिर दापा और अभी दाफा के रूप में प्रचलन हुआ ऐसा मेरा तथा अन्य कई दाफा गुरुओं का मानना है। अब दाफा शब्द का अर्थ है यह समूह गायन है जिसमे गुरु को मध्य स्थान में रखकर गुरु के दाई और बाई दो समूह बनाकर जैसे गुरु गाए उसी को दोहोराकर राग के सुर और ताल के साथ गायन करना होता है। इस में गवारा तथा चालिं गायी जाती है। ग्वारा गायन में शब्द कम परंतु अलग अलग ताल में रचना को लम्बा करके गाई जाती है। चालिं गवारा गायन से छोटा होता है। जिसमें ज़्यादातर एक ही ताल बजता है। दाफा गायन सुंदर गायन शैली है।

प्रश्न : ललितपुर जिला में नेवारी संगीत का प्रभुत्त्व कितना है ?

उत्तर : उपत्येका के तीनों नेवारी मुख्य शहर में से ललितपुर का एक अलग सा व्यक्तित्व एवं अपने संस्कृति, कला, कौशल इत्यादि में विशाल शहर है। पूर्वजों का योगदान एवं मेहनत हम अभी भी इस नगर

की परिक्रमा करकर देख सकते हैं। इस शहर में नेवारी संगीत की प्रभुत्त्व की बात करे तो प्राचीन काल से तो कम हुआ है परंतु अभि भी माहोल तो अच्छा है। यहा पे लगभग चालीस दाफा समूह अभी भी निरंतर रूप में चल रहे हैं जिसमें वर्ष के मुख्य तीन महिने श्रावण, भाद्र और माघ महिने में नित्य भजन किए जाते है। बाकी जात्रा-पर्व, त्यौहार इत्यादि में गायन वादन किया जाता है। वर्तमान समय में दाफा संगीत के अलावा नेवारी एलबम गीत, फिल्मी गीत भी लोगों में छाया हुआ है। अन्य भाषा के गीत के साथ साथ नेवारी गीत भी सुनने की इच्छा रखते हैं।

प्रश्न : नेवारी संस्कृति एवं संगीत की उत्थान के लिए किस प्रकार के प्रयास हो रहे है ?

उत्तर : इस नगर में वर्तमान समय में अपनी संस्कृति एवं संगीत के उत्थान के लिए अगर नगर के भीतर भाग में शादी हो और वाद्यों का प्रयोग करना हो तो केवल नेवारी वाद्य का ही प्रयोग करने का नियम लागू किया है। अन्य प्रकार के डीजे, बैंड बाजा बजाना निषेध किया है। इस प्रकार के प्रयास नगर की कुछ संस्थाओं द्वारा जारी है।

नेवारी वाद्य प्रशिक्षक एवं कलाकार – 'नरेश महर्जन'

प्रश्न : आप का परिचय ?

उत्तर : मैं नरेश महर्जन, वर्तमान समय में 'राष्ट्रीय नाच घर' जमल काठमांडू में वाद्य प्रशिक्षक के पद में कार्यरत हूं।

प्रश्न : आप वाद्य वादन में कौन कौन सा वाद्य सिखाते हैं ?

उत्तर : मैं वाद्य वादन में ज़्यादातर नेवारी संगीत में प्रयोग अवनद्ध वाद्य जैसे नाय् खिं, पछिमा, खिं, धिमे इत्यादि के साथ साथ मादल, तबला, पोंगा वाद्य भी सिखाता हूं। समय समय में 'काठमांडू बाजा पुचः' एक समूह है जिसमें विभिन्न वर्कशॉप, ट्रेनिंग देने का काम भी करता हूं। और आर्केस्ट्रा बैंड में भी संलग्न हूं।

प्रश्न : आप दाफा गायन में संगत करते हैं ?

उत्तर : जी कभी कभी। दाफा गायन में संगत के लिए बहुत ज्यादा अभ्यास चाहिए जो मैं ज्यादा समय दे नहीं पारहा हूं। परंतु मुझे नेवारी वाद्य बजाना बहुत पसंद है। दाफा गायन में एक ही भजन में अनेक ताल का मिश्रण, समान, दुगुन की लय बजाना आनंदमय लगता है।

प्रश्न : अभी की नई पीढ़ी कौन सा नेवारी वाद्य बजाने में रुचि रखते है ?

उत्तर : अभी की नई पीढ़ी ज़्यादातर धिमे, बांसुरी इत्यादि बजाने में इच्छित है क्योंकि यह वाद्य बजाना आसान है और बांसुरी में अपनी मन पसंद धुन तथा गीत बाजा सकते है। बाकी के वाद्य सीखने वाले भी है परंतु अल्प है।

प्रश्न : तो नई पीढ़ियों को नेवारी संगीत के प्रति किस प्रकार रुचि को बढ़ाया जाए ताकि इस संगीत का संरक्षण कर सके ?

उत्तर : मुझे लगता है कि जिस वाद्य तथा गायन में नवीकरण कर सकते है उनमें नया नया तरीका निकालकर विद्यार्थी को सिखाना चाहिए। उसके बाद प्रस्तुतीकरण देने की अवसर देना चाहिए तब जाके नई पीढ़ियों को नेवारी संगीत के प्रति आकर्षित कर सकेंगे। सरकार की तरफ से इस कार्य के लिए प्रोत्सान एवं सहयोग देने होंगे। अपनी लोक संस्कृति का जागरण एवं संरक्षण करने की कार्यप्रणाली बनाकर आगे बढ़ानी होगी। वर्तमान समय में महिलाओं की भी सहभागिता देखने को मिलती है जो बहुत सकारात्मक बात है। नेवारी दाफा समूह के गुरु तथा अन्य सदस्य मिलकर सभी इच्छुक व्यक्तियों को सीखने का अवसर देना चाहिए, चाहे वह महिला हो या निम्न जाति के लोग हो।

नेवारी दाफा वाद्य गुरु – 'मुक्तिनाथ महर्जन'

प्रश्न : आप का परिचय ?

उत्तर : मैं काठमांडू कीर्तिपुर निवासी मुक्तिनाथ महर्जन। मैं कीर्तिपुर तननी दाफा समूह में वाद्य गुरु हूँ।

प्रश्न : आप ने वाद्य बजाना कैसे सीखा ?

उत्तर : मुझे बचपन से संगीत में रुचि थी इसलिए दाफा समूह में जाकर सुनता था। दाफा समूह में जाते जाते सीखने की इच्छा होने लगी और गुरु के सानिध्य में जाकर सीखने लगा। आज उन्ही के आशीर्वाद और प्यार के कारण में दाफा के वाद्य गुरु के स्थान में हूँ।

प्रश्न : आपने लिखित या मौखिक रूप में किस प्रकार सीखा ?

उत्तर : नेवारी संगीत में चाहे गाना हो या बजाना दोनों मौखिक रूप में सिखाया जाता था। तो मैंने भी मौखिक तरीके से सीखा। प्राचीन समय से मौखिक रूप में ही सिखाने की परंपरा चलती आई है इसलिए गुरु को सुनके देखके ही सीखना पड़ता था। यह तरीका शायद सभी नेवारी दाफा समूह में होगा ऐसा मेरा मानना है। परंतु वर्तमान समय में लिखने की परम्परा प्रचलन में आ रही है।

प्रश्न : दाफा संगीत किस प्रकार की गायन शैली है ?

उत्तर : दाफा संगीत निश्चित स्वर तथा ताल में बंधा हुआ गायन वादन शैली है। यह राग में निबद्ध होता है। प्राचीन समय से गुरु शिष्य परम्परा में सिखाया जाता है।

प्रश्न : दाफा गीत में क्या क्या गीत प्रकार गया जाता है और कितने समय अवधि तक गाया जाता है ?

उत्तर : दाफा गीत में गवारा गायन होता है जो लम्बा समय लेकर गाते है। एक गवारा रचना गाने में लगभग 45-50 मिनट या ज्यादा से ज्यादा एक घण्टा तक गाया जाता है। उसके बाद चालिं गीत गाते है जिसमे गवारा गीत से कम समय लगता है। बाकी के ऋतु तथा चाडपर्व और वार के आधार पर भजन गीत गाया जाता है जो नेवारी लोक धुन में निबद्ध होता है।

प्रश्न : कीर्तिपुर में कौन कौन से समय में दाफा तथा अन्य गीत प्रकार गाया जाता है ?

उत्तर : कीर्तिपुर में भी अन्य नेवारी स्थानों के तरह वर्ष के मुख्य तीन महीने श्रावण, भाद्र तथा माघ में प्रत्येक दिन गायन तथा वादन करने की परंपरा है। नेवारी संस्कृति के आधार पर कोई एक चाडपर्व होती है। जो वर्ष भर मनाई जाती है उसमें पर्वों और जात्रा के दिन दाफा गायन करते है। दाफा संगीत के अलावा कीर्तिपुर में विभिन्न भजन समूह है जिसमे विभिन्न देवदेवियों के भजन तथा बरहमासे गीत, धुन गाया बजाया जाता है।

प्रश्न : परंपरागत रूप में दाफा गायन वादन सीखने के बाद विद्यार्थी अपनी प्रस्तुति में परिपक्कता लाने के लिए क्या करते हैं ?

उत्तर : दाफा संगीत में अपनी टोल(सोसाइटी) में इच्छुक व्यक्तियों के समूह बनाकर तीन या छे महीने प्रत्येक दिन सिखाया जाता है। इतना सीखने के बाद भी यदी विद्यार्थी को गाना तथा बजाने में निपुणता नहीं मिलती तब उस विद्यार्थी को दाफा गायन के समय आके सुनना तथा बजाने की जरूरत होती है तभ जाके धीरे धीरे उसमें निखरता आएगी।

प्रश्न : कीर्तिपुर में नेवारी संगीत के उत्थान के लिए स्थानीय निकाय द्वारा कितना साथ है ?

उत्तर : मुझे लगता है कि नेवारी जाति की पहचान ही नेवारी संस्कृति तथा संगीत में होती है। इसलिए जो परम्परा अभी तक चल रही है उसके संरक्षण की बहुत आवश्यक है क्योंकि अभी के युवा पीढ़ी नेवारी संगीत से हट रहे है। अपनी पहचान को बढ़ाना हो तो नेवारी आम जनता एवं सरकारी निकाय द्वारा आवश्यक पहल करनी चाहिए। कीर्तिपुर में कभी कभी नगरपालिका तथा अन्य संस्था द्वारा नेवारी दाफा

संगीत के कार्यक्रम होते है। जैसे कि 2018 में नगरपालिका द्वारा आयोजित दाफा गायन प्रस्तुति करके कार्यक्रम किया गया था जिसमें सभी कीर्तिपुर नगरपालिका के दाफा समूह की सहभागिता थी। इस प्रकार के कार्यक्रम से नेवारि कलाकारों को हौसला देने का काम होगा तो ही हमारी नेवारी जाति के संगीत एवं संस्कृति को पूरे देश तथा विदेशों तक पहुचाने के कार्य में सफल होंगे।

5.2 जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता

सम्पूर्ण नेपाल में नेवारी जाति की पहचान उत्कृष्ट और सुसज्जित रूप में पायी जाती है। उस पहचान को बनाने में नेवारी संगीत एवं संस्कृति की मुख्य भूमिका मान सकते है जो सदियों से चली आ रही है। इस परम्परा को अभी भी हम देख सकते है इस का मुख्य कारण नेवारी संगीत की लोकप्रियता है। नेवारी पूर्वज संगीतज्ञों ने इस विद्या को कई साधना एवं प्रस्तुति देकर जनमानस में नेवारी संगीत की जड़ को मजबूत बनाया है। जिससे प्रेरित हो कर एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी तक पाहुचाने में सफल हुए हैं। नेवारी संगीत एक लीक संगीत प्रकार है, प्राचीन समय में जिसका प्रचार प्रसार संभवतः निश्चित स्थान में ही हुआ होगा क्योंकि वर्तमान समय की तरह संचार माध्यम का विकास नहीं था। परंतु अभी के समय में मौखिक रूप में प्रबल इस संगीत के प्रचार प्रसार एवं जनमानस में लोकप्रियता बनाने में संचार माध्यम का मुख्य हाथ हो चुका है। संचार माध्यम के बिना व्यक्ति का जीवन असंभव सा होने लगा है। संगीत का विकास एवं उसे देश विदेश तक पाहुचाने का कार्य संचार माध्यम के जरिए हो रहा है। नेवारी लोक संगीत को भी जनमानस तक सुलभ तरीके से पाहुचाने का काम हो रहा है। संचार माध्यम के मुख्य भेद को देखा जाए तो पहला प्रिंट माध्यम के अंतर्गत पत्र- पत्रिकाएँ, पुस्तक, चित्र, समाचारपत्र आदि और दूसरा इलैक्ट्रोनिक माध्यम के अंतरगत रेडियो, टी. वी, कम्प्युटर, इंटरनेट इत्यादि है।[1]

वर्तमान समय में नेवारी जाति में साक्षात्कार की संख्या बढ्ने लगी है इसलिए प्रिंट माध्यम जैसे पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकों की लेखन कला भी बढ्ने लगी है। जिसमे समाचार, देश-विदेश की खबरों के अलावा अपनी आसपास की परम्परा, रीतिरिवाज, संगीत संबंधी शास्त्र, गुरु के साथ सीखी हुई कला को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना, गीतों का प्रकाशन करना इत्यादि होता है जिससे नेवारी शास्त्र पक्ष को मजबूत बनाने में मदद मिलती है। दुसरे इलेक्ट्रोनिक माध्यम रेडियो से भी नेवारी संगीत को फैलाने में मदद मिली है। यह एक श्रव्य माध्यम है। इसकी सहायता से नेवारी संगीत के विभिन्न प्रकार के गीत तथा कलाकारों के बारे में जानकारियां दी जाती हैं। अपनी मौलिक परम्परा संस्कृति के बारे में जानकारी दी जाती है। संगीत जगत के लिए महत्वपूर्ण मंच रहे है। रेडियो ने व्यक्ति विशेष को संगीत के पथ पर अग्रसर होने का पूर्ण अवसर प्रदान किया है। रेडियो एक ऐसा संचार है जो देश के छोटे छोटे गाँव तक फैला है इसलिए हर प्रकार के संगीत विशेषकर लोकगीतों के लिए तो किसी वरदान से कम नहीं। रेडियो के कारण कई नेवारी तथा अन्य जनजाति के गीत रिकॉर्डिंग किए गए और नई पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का प्रवंध भी किया जाता है।

1. http://ignited.in/I/a/304286

तीसरा इलेक्ट्रोनिक माध्यम टी. वी(टेलीविजन) है जो दृष्य एवं श्रव्य के माध्यम से जनता को कार्यक्रम दिखाता है। वर्तमान समय में कई प्रकार के लोकल से लेकर इंटरनेशनल टी. वी चैनल प्रसारण हो रही है। टी. वी पर श्रवण के साथ साथ दृष्य को भी रेकॉर्ड करके दिखाया जाता है, जिसका दर्शक भरपूर आनंद और ज्ञान लेते हैं इसलिय आज संचार माध्यम को सबसे प्रभावशाली माध्यम माना जाता है। टी. वी के जरिए विभिन्न कला के लोक पक्ष, शास्त्रीय पक्ष रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकते है।

इलेक्ट्रोनिक माध्यम इंटरनेट वर्तमान समय का सबसे प्रभावशाली संचार माध्यम है। कोई भी विषय या विधा हो, संगीत के दुर्लभ गीत हो, नृत्य, नाटक, वाद्यवादन, प्रत्येक प्रांत के लोकसंगीत इत्यादि गूगल या यूट्यूब के माध्यम से ऐसी सभी रेकोर्डिंग्स सुनना तथा देखना अत्यंत सुलभ हो गया है। संगीत जगत के लिए प्रचार प्रसार की सबसे बढ़ी क्रान्ति इंटरनेट बना हे जिसने सभी संचार माध्यमों को पीछे छोड़ दिया है। अभी तो केवल सुनना ही नहीं बल्कि शिक्षण प्रविधि भी उतनी ही व्यापक फैलने लगी है। सांगीतिक कार्यक्रमों को हम जब चाहे समय निकालकर मनोरंजन कर सकते है। सभी कलाकारों को अपनी कला दिखाने का उत्कृष्ठ मंच उपलब्ध हुआ है। इंटरनेट के माध्यम से बुजुर्गों द्वारा गाया हुआ परंपरागत गीत, वाद्य वादन, लोकगीत, भजन इत्यादि कई प्रकार के गीत अपलोड किए हुए मिलते हैं जिससे कलाकारों की पहचान भी बढ़ जाती है और उस रेकर्डिंग को डाउनलोड कर के सुन सकते है और सीख सकते है। इन सभी संचार माध्यमों की वजह से नेपाल का नेवारी संगीत, जनता तक पहुचाने में खूब मदद मिली है। देश के कई स्थानों में निवास करने वाली नेवारी जाति इस का भरपूर लाभ ले पा रही है।

नेवारी संगीत के प्राचीन समय की बात करें तो उस समय संचार माध्यम की कोई बात ही नहीं थी। तो सवाल यह है कि अपनी संगीत प्रस्तुति कब और कहां की जाती होगी? इस प्रश्न में नेवारी विद्वानों का कहना है कि नेवारी बस्ती के मुख्य मुख्य मंदिर, दरबार के सामने 'दबू' (मंच) बनाए होते हैं जहां पे प्राचीन समय से नेवारी संगीत कला, नाटक इत्यादि प्रस्तुत किया जाता था। आज भी नेवारी दबू मौजूद देख सकते है। यह चारकोना आकार का होता है। लगभग जमीन की सतह से दो या ढाई फिट की उंचाई पर होता है। 28/28 वर्गइंच इसकी लंबाई और चौढ़ाइ होती है।[(1)] दबू का प्रचलन ज़्यादातर मल्ल समय से हुआ है ऐसा विद्वानों का मानना हैं क्योंकि मल्ल राज्य काल में संगीत एवं नाटक प्रदर्शनी करने का चलन तीव्र हुआ था।[(2)] नेवारी संगीतकर एवं गायक 'प्राज्ञ रामकृष्ण दुवाल' के मतानुसार 'नेवा दबू' का सीधा संबंध नेवारी परंपरा, संस्कृति एवं कला के साथ जुड़ा हुआ है। नेवारी संगीत परंपरा के अंतर्गत रहकर जिस तरह गुरु शिष्य परम्परा में सिखाई जाती है उस कला को प्रदर्शन करने के लिए संचार जब माध्यम

---

1. राजभण्डारी, सुनीता/ कातीव्याखनय् नृसिंह अवतार/ p-73
2. प्रजापति, सुभाषराम/ पुलांगु नेपालभाषा नाटकया संगीत पक्ष/ p-49

की कोई सुविधा नहीं थी तो केवल दबू ही वह स्थान रहा जहां कला का प्रदर्शन किया जाता था। दबू के प्रचलन के विषय में ठिमी के दिगुटोल के दबली 'ले शिलापत्र' में नेपाल संवत् 706 में श्री श्री श्री त्रिभुवन मल्लदेव, गंगादेवी ठकुरिनी, श्री श्री श्री जय त्रैलोक्य मल्लदेव, त्रिभय इत्यादि के समय में निर्माण करके विभिन्न नाच गान प्रस्तुति के बारे में उल्लेख किया है और इस दिगु का दबू उपत्यका के सभी दबू में से प्राचीनतम के रूप में स्वीकार किया गया है।(1) दबू के विषय में विद्वानों के मतानुसार यह नेवारी जाति के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व से जुड़ा हुआ है जहा मनोरंजन के साथ साथ राज्याभिषेक, राजसभा आदि भी होती थी। इस प्रकार 'दबू' नेवारी संगीतकरमियों, कलाप्रेमियों के लिए अपनी कला खुलकर दिखाने का स्थान है। वर्तमान समय में भी तीव्र संचार माध्यमों का प्रयोग के साथ साथ प्रत्यक्ष कार्यक्रमों की प्रस्तुति में दबू का प्रयोग होता है।

नेवारी संगीत में संचार माध्यमों के प्रभावों की बात करे तो वि. सं 2007 में नेपाल में निरंकुश राणा शासन का अंत हुआ और देश में प्रजातन्त्र शुरू हुआ। सरकार ने जनता को सूचित करने के लिए प्रथम बार 'रेडियो नेपाल' नामक संचार माध्यम की स्थापना की। जिसके द्वारा देश की विभिन्न जनजातियों के भाषा में समाचार तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम क्रमबद्ध रूप में संचालन करने लगे। परंतु कुछ समय बाद देश की राजनैतिक परिस्थिती में परिवर्तन होने के कारण जनजाति की भाषा में रेडियो में प्रसारण होना बंद हुआ। फिर देश में वि. सं 2046 में नयाँ संविधान आया और पुनः विविध जनजातियों की भाषा को राष्ट्रीय भाषा की मान्यता प्रदान करके संचार माध्यम में सम्मिलित किया गया।

वि. सं 2046 के बाद देश में प्रथम बार नेपाल टेलिभिजन स्थापना हुआ जिस में नेवारी भाषा में समाचार तथा नेवारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रसारण होने लगे जिससे नेवारी जनमानस में अवश्य ही उत्साह एवं हौसला उत्पन्न हुआ होगा। इसके बाद 'रेडियो नेपाल' से सहकार्य करके विभिन्न एफ.एम खुलने लगे। संचार माध्यम की सहायता से अनेक राज्य भाषाओं के प्रचार प्रसारण करने में मदद मिली। इन बातों को ध्यान देते हुए नेवारी जनता ने अपनी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान करने हेतु वि. सं 2049 के बाद सरकार द्वारा संचार माध्यम को निजी क्षेत्र में प्रसारण करने की अनुमति प्रदान की तत्पश्चात सर्वप्रथम 'रेडियो सगरमाथा' स्थापना किया और उसके बाद शताब्दी पुरुष डॉ. सत्यमोहन जोशी और सदस्य सचिव इन्द्र माली के प्रमुख प्रयास से नेवारी भाषा, साहित्य और संस्कृति संवर्द्धन के उद्येश्य से कीर्तिपुर काठमांडू में नेपालभाषा एकेदमि की स्थापना करके अपना ही निजी एफ.एम च्यानल स्थापित किया।(2) वर्तमान समय में नेपाल भाषा एकेदमी नेवा एफ.एम 106.6 मेगाहर्ज के रूप में 24 घण्टे प्रसारण हो रही है। इस

1. लछि, गणेशराम/ अमूर्त सांस्कृतिक सम्पढामा मध्यपुर/ p-55
2. नेवाः प्रज्ञा/ नेपालभाषा एकेदमि/ p-83

एफ.एम में केवल नेवारी भाषा से संबंधित गतिविधियों का प्रसारण किया जाता है। वर्तमान समय में एफ.एम, रेडियो के अलावा नेवारी टी. वी च्यानल जैसे 'नेपाल मण्डल' जो ललितपुर में सन् 2014 में स्थापना हुआ। नेवाः टी. वी सन् 2018 से काठमांडू में संचालन में है। इस टी. वी च्यानल में ज़्यादातर नेवारी भाषा के कार्यक्रम को प्रस्तुत किया जाता है जिसे नेवारी संस्कृति, कला और संगीत को बढ़ावा देने में मदद मिल रही है।

नेवारी संगीत को बढ़ावा एवं प्रोत्साहन हेतु, वर्तमान समय में कई संस्था स्थापित की है जैसे 'नेवा देय दबू'', 'ज्यापु महागुथि', आशा सफू कुठि' इत्यादि। नेपाल की विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे त्रिभुवन युनिवर्सिटी के अन्तर्गत ललितकला क्याम्पस, पद्ममकन्या क्याम्पस और रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस में संगीत विषय में लोक संगीत के अंतर्गत विभिन्न जनजातियों के गीत सिखाए जाते हैं। इसी प्रकार काठमांडू युनिवर्सिटी में भी लोक संगीत का पाठ्यक्रम शामिल किया है जिसमे नेवारी संगीत को भी प्राथमिकता दी गई है। वरिष्ठ वाद्य वादक प्रो. न्हुच्छे बहादुर डंगोल के अनुसार वर्तमान समय में नेवारी संगीत के उत्थान के लिए ई. सं. 2018 से कुछ विद्यालयों में भी नेवारी संगीत विषय के पठ्यक्रम शुरू किए गए हैं जिसमे शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों सिखाए जाते हैं। इस प्रकार कई छोटे बडे प्रयास इस संगीत के प्रचार प्रसार के लिए सुनने और देखने को मिलते हैं।

सीखने के अलावा नेवारी संगीत में दाफा संगीत और भजन के बाद वर्तमान समय में विभिन्न आधुनिक नेवारी गीत, नेवारी एल्वम गीत, नेवारी फिल्म गीत की व्यापकता बढ़ी है। जिससे नए नए गायक, संगीतकारों का जन्म हुआ है और नेवारी संगीत को और व्यापक बनाने में मदद मिली है। इसी क्रम में विभिन्न नेवारी बैंड जैसे कुटुम्ब बैंड, इमर्ज बैंड इत्यादि भी वर्तमान समय में प्रचलित है। इस तरह के बैंड की स्थापना द्वारा केवल नेपाल में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी नेवारी संगीत कला संस्कृति कि प्रचार प्रसार करने में मदद मिल रही है।

समय के चलते चलते वर्तमान स्थिति में नेवारी कला संगीत को बढ़ावा, प्रोत्साहन एवं इस की नीव को बचाने के लिए नेवारी कलाकार, शुभचिंतकों का विषेश योगदान अमूल्य है। परंतु अन्य विधाओं की तरह नेवारी संगीत में भी पाश्चात्यकरण एवं आधुनिकीकरण का असर जरूर पड़ा है। नेवारी संगीतज्ञों के अनुसार सांस्कृतिक चेतना के अभाव के कारण इस संगीत तथा अन्य क्षेत्र में ह्रास आने लगा है। आज से कुछ वर्ष पूर्व दाफा संगीत समूह के गायक तथा वादकों की संख्या अनगिनत रूप में हुआ करती थी। वे अपनी कार्य कि व्यस्तता के अलावा अपनी कला संगीत के प्रति प्यार के कारण समय निकाल कर साधना करते थे परंतु अभी की नई पीढ़ी में उतना जोश एवं श्रद्धा देखने को कम मिलती है। अगर समय पर ही इन बातों का ध्यान स्थानीय निकाय एवं नेवारी कला, साहित्य एवं संगीत में जुड़े हुए व्यक्ति मिलकर इस

क्षेत्र में हुई कमी कम्जोरी को हटाकर नई रीति अपनाकर सीखना तथा सिखाने की परम्परा शुरू करेंगे तो अवश्य ही ज्यादा जनमानस, इस कला में जुडेंगे और अपनी संस्कृति को उच्च रखने में सफल होंगे ऐसा शोधार्थिनी का मानना है।

5.3 प्रचलित नेवारी गीतों की स्वरलिपियाँ :

संगीत की गायन विधा में विभिन्न प्रकार होते है जैसे शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, भजन, आधुनिक गीत, फिल्मी गीत, लोक गीत इत्यादि। नेवारी संगीत में भी इसी प्रकार विभिन्न गीत प्रकार प्रचलित है। शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत दाफा संगीत प्रकार को माना गया है। इसके बाद भजन, बारहमासा गीत, लोक गीत प्रकार है। वर्तमान समय में एल्बम गीत जिसे आधुनिक गीत कह सकते है और फिल्म गीत अत्यंत प्रचलित हैं। नेवारी भाषा में अनेक फिल्मों के निर्माण में गीतों का भरपूर प्रयोग किया गया है जिससे नेवारी संगीत को प्रबल बनाने में सहयोग मिल रहा है। वर्तमान समय में नेवारी समाज में प्रचलित विभिन्न लोक धुन में निवद्ध गीत, फिल्म गीत तथा आधुनिक गीत में से कुछ अत्यंत प्रचलित गीत तथा उनकी स्वरलिपियाँ इस प्रकार है :

1 द्यः यात सिन्हः स्वां[1] ताल – चो (4 मात्रा)

स्थायी

द्यः यात सिन्हः स्वां मयजु यात ह्याँगु स्वां

भाजु यात गुणकेरा स्वां

हाइ रे सीरिमाया तता थः गु लपुं

केव चिया ल्यूने न्हाँ

अंतरा

ल्यायम्ह दाजूं धौ ग्वः हई

ल्यासे ततां उला बजि हई

लमि मयजूं ग्वाः ग्वय ज्वना वइ

हाइ रे सिरिमाया तता थः गु लपुं

1. साक्षात्कार/ नेवारी लोक गायक- श्रेष्ठ भृगुराम/ मिति- 28/05/2016

केव चिया ल्यूने न्हाँ

द्य: यात स्या: बजि मयजु यात ल्हुया बजि

भाजु यात तिकिं बजि न्हाँ

स्वां छफ्व: कासें निसें झ्या: क्वसं वसां निसें

मोहनीनं क्यन जित न्हाँ

हाइ रे सिरिमाया तता थ: गु लपुं केव चिया ल्यूने न्हाँ

द्य: यात स्या: बजि मयजु यात ल्हुया बजि

भाजु यात तिकिं बजि न्हाँ

भावार्थ :उपर उल्लेखित गीत 'द्य: यात सिन्ह: स्वां' नेवारी लोक गायक भृगुराम श्रेष्ठ द्वारा गाया गया है। यह गीत लोक धुन में आधारित हरि बहादुर रञ्जित द्वारा रची गई है। यह प्रेम गीत है जिसमे एक लड़का लड़की को पसंद आने लगता है। लड़का अपनी कल्पनाओं में उस लड़की के साथ शादी करने की सोच बनाता है। इसी भाव में सम्पूर्ण गीत की रचना की गई है।

स्थायी

तिं	-	**छु**	-	**तिं**	-	**छु**	-
-	**प**	**प**	**ध**	**सां**	-	**नि**	-
S	द्यः	या	त	सिन्	हः	स्वां	S
X		0		X		0	
ध	-	**प**	-	**म**	-	**ग**	**रे**
म्य	जु	या	त	हयाँ	गु	स्वां	S
-	**पध**	**प**	**म**	**ग**	**गरे**	**रे**	**सा़नि**
S	भाजु	या	त	गु	णS	के	राS
सा	-	-	-	**प**	**प**	-	**ध**
स्वां	S	S	S	हा	इ	S	रे
प	**पम**	**ग**	**रे**	-	**पध**	**प**	**म**
सिरि	माया	त	ता	S	थःगु	ल	पुँ
ग	**गरे**	**रे**	**सा़नि**	**सा**	-	-	-
केव	चिया	ल्यू	नेS	न्हाँ	S	S	S

अंतरा

-	**सांरें**	**सां**	**रें**	**नि**	**नि**	**सां**	**-**
ऽ	ल्याय्म्ह	दा	जुं	धौ	ग्वः	हई	ऽ
-	**सांरें**	**सां**	**रें**	**नि**	**नि**	**सां**	**-**
ऽ	ल्यासे	त	तां	उला	बजि	हई	ऽ
-	**मप**	**नि**	**नि**	**सां**	**सांरें**	**रें**	**सांनि़**
ऽ	लमि	मय्	जुं	ग्वाः	ग्वय्	ज्व	नाऽ
सा	**-**	**-**	**-**	**प**	**प**	**-**	**ध**
वइ	ऽ	ऽ	ऽ	हा	ई	ऽ	रे
प	**पम**	**ग**	**रे**	**-**	**पध**	**प**	**म**
सिरि	माया	त	ता	ऽ	थ : गु	ल	पुँ
ग	**गरे**	**रे**	**सानि़**	**सा**	**-**	**-**	**-**
केव	चिया	ल्यू	नेऽ	न्हाँ	ऽ	ऽ	ऽ

2 छि भाजु झाइला धका[(1)] ताल – 8 मात्रा

स्थायी

छि भाजु झाइला धका सुथ न्हापां मोन ल्हुया

कोलं बुया अज उला सिन तिना समा याना

अंतरा

छि भाजु झाइला धका ज्वाय ज्वाय तिसां तिया

बसन्त या केवचा थे स्वां जुया ह्वोया चोना

छि भाजु झाइला धका गुनकेरा छेने छुया

नास्वा चिकन: बुया पिया चोना छित भाजु

भावार्थ : 'छि भाजु झाइला धका' नेवारी गीत वर्तमान समय में अत्यंत प्रचलित गीत है जिसे रोशनी श्रेष्ठ ने गाया और रचना मनराजा नक: मि द्वारा की गई है। यह एक प्रेम गीत है। इस गीत में लड़की अपने

1. https://youtu.be/WEwM9PNKFmc

प्रेमी के आने का इंतजार करके बैठती है। प्रेमी के आने की खुशी में सुबह से अनेक श्रृंगार करके, अच्छे कपड़े पहनकर, गरगहना पहनकर इंतजार करने का वर्णन इस गीत में किया गया है। यह गीत आठ मात्रा ताल में निवद्ध है।

छि भाजु झाइला धका (ताल- कहरवा)

स्थायी

प	**-**	**ग**	**रेसा**	|	**रे**	**ग**	**रे**	**रे**	|
छि	S	भा	जुS	|	झाइ	ला	ध	का	|
X									
प	**प**	**ग**	**रेसा**	|	**रे**	**ग**	**रे**	**रे**	|
सु	थं	न्हा	पांS	|	मो	न	ल्हु	ला	|
X									
-	**मम**	**-ध**	**प**	|	**-**	**गग**	**-प**	**म**	|
S	कोलं	Sबु	या	|	S	अज	Sउ	ला	|
X									
-	**गरे**	**-सा**	**ध**	|	**सा**	**रेग**	**रे**	**सा**	|
S	सिनः	Sति	न	|	स	माः	या	ना	|
X									

अंतरा

-	**म**	**म**	**ग**	|	**रे**	**ग**	**सा**	**रे**	|	**-**	**म**	**प**	**ध**	|	**प**	**प**	**प**	**रे**	|
S	छि	भा	जु	|	झाइ	ला	ध	का	|	S	ज्वाय्	ज्वाय्	S	|	ति	सां	ति	या	|
-	**म**	**पध**	**निध**	|	**प**	**प**	**प**	**प**	|										
S	ज्वाय्	ज्वाय्	S	|	ति	सा	ति	सा	|										
-	**गम**	**-प**	**ध**	|	**ध**	**नि**	**ध**	**ध**	|	**-**	**निध**	**-ग**	**म**	|	**प**	**प**	**प**	**प**	|
S	बसन्	Sत	या	|	केत	चा	S	थे	|	S	स्वां	Sजु	या	|	ह्व	या	चो	ना	|
-	**धप**	**-ग**	**सा**	|	**रे**	**ग**	**सा**	**सा**	|										
S	स्वां	Sजु	या	|	ह्व	या	चो	ना	|										

3 सिरसा: या हेकू[1] ताल – चो (8 मात्रा)

स्थायी

सिरसा: या हेकू जिमी दाइचाँ बिउगु

व हेकू कासां निसें मन थाते लात

उल्सानिसें मन फर्के जुल

अंतरा

ञचा स्वयां धेधेचु फेलू स्वयां फफस्व:

जिमी दाइचाँ हिला: हिला: फुकं दयेका बिलरे

उल्सानिसें मन फर्के जुल

त्यांका त्यांका तांगाचा हाथां हाथां हाथंचा

जिमी दाइचाँ द्यकाबिल हिसि दयेक लवचा

उल्सानिसे मन फर्के जुल

भावार्थ: यह गीत नेवारी लोक धुन में रचित गीत है जिसे 'प्राज्ञ रामकृष्ण दुवाल' ने संकलन किया है और साबिता मालाकार ने गाया है। यह प्रेम गीत है। नेवारी जाति में प्राचीन समय से चली आ रही अपनी वेशभूषा और पहनने के कपड़े अपने घर में ही मशीन के द्वारा बनाए जाते हैं। उस मशीन में से एक भाग है जिसे 'हेकू' कहते है जो खराब हो गया है। लड़की इसी कारण परेशान हो जाती है। फिर एक भाई आकर उसको ठीक कर देता है। लड़की यह देखकर खुश हो जाती है और प्यार में पड़ जाती है। इस प्रकार अपनी प्राचीन वस्तुएँ जैसे हेकू, ञचा, फेलू आदि शब्द का प्रयोग करके लेखक ने आकर्षत ढंग से गीत की रचना की है जो नेवारी समाज में अत्यंत लोकप्रिय है।

1. महर्जन, शेष नारायण/ बांसुरी स्वरलिपि/ p-31

सिरसा : या हेक (ताल- चो, चार मात्रा)

स्थायी

तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-
सारे	**ग**	**-**	**ग**	**ग**	**-**	**रे**	**-**	**ग**	**गरे**	**सा**	**सानि़**	**ध़**	**-**	**प़**	**-**
सिर	साः	ऽ	या	हे	ऽ	कु	ऽ	जि	मिऽ	दाइ	चांड	बिउ	ऽ	गु	ऽ
-	**प़ध़**	**सा**	**साध़**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**	**-**	**सा**	**सा**	**रे**	**ग**	**प**	**ध**	**-**
ऽ	वऽ	हे	कूड	का	सां	नि	सें	ऽ	मन	था	ते	ला	ऽ	त	ऽ
पध	**सांनि**	**ध**	**पर्म**	**ग**	**-रे**	**सारे**	**ग**	**रे**	**-**	**-**	**-**	**सा**	**-**	**-**	**-**
उल्	साऽ	नि	सेंऽ	म	ऽन	फर्	के	जु	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		X		0		X		0		X		0	

अंतरा

तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-
प	**प**	**ग**	**प**	**ध**	**ध**	**प**	**-**	**ग**	**ग**	**सा**	**रे**	**प**	**प**	**ग**	**-**
सां	चा	स्व	यां	धे	धे	चु	ऽ	फे	लू	स्व	यां	फ	फ	स्वः	ऽ
-	**प़ध़**	**सा**	**साध़**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**	**-**	**सा**	**सा**	**रे**	**ग**	**प**	**ध**	**-**
ऽ	जिमि	दाइ	चांड	हि	लाः	हि	लाः	ऽ	फुकं	दये	का	बि	ल	रे	ऽ
पध	**सांनि**	**ध**	**पर्म**	**ग**	**-रे**	**सारे**	**ग**	**रे**	**-**	**-**	**-**	**सा**	**-**	**-**	**-**
उल्	साऽ	नि	सेंऽ	म	ऽन	फर्	के	जु	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		X		0		X		0		X		0	

4 राजमति वा[1]

स्थायी

- राजमति वा मतिना याये वा न्हायाई पुसे च्वंगु थ्व खेलय्
- वा रे यज्जु मन येचुके वा न्हायाई पुसे च्वंगु थ्व ज्या: लय्

अंतरा

- छंगु थ्व ख्वा: या ति बांला कुलिकुलि चिंगु सं झन बांला

बांला हे उलि बान मला गुलि जक्क बांला मिखा मिखा बांला

हाये मिखा बांला

- यम्ह: तुयु वा झी तरे वा म्हगसे म्ह: के व ज्व: लय्

राजमति वा मतिना याये वा न्हायाई पुसे च्वंगु थ्व खेलय्

भावार्थ : नेवारी जाति में अत्यंत प्रचलित 'राजमति वा' गीत नेवारी फिल्म राजमती का है। यह प्रेम गीत है जो युगल(डुएट) रूप में गाया गया है। यह ताल कहरवा में निबद्ध गीत है। इस गीत में दोनों प्रेमी व पेमिका दोनों की बातचीत लिखी है। बाग में घूमने की बात है और लड़का लड़की की सुंदरता का वर्णन कर रहा है। इन्ही प्रेम भावों का इस गीत में वर्णन किया गया है।

राजमति वा

स्थायी

सा	**रे**	**सा**	**ऩि**	**सा**	**-**	**सा**	**रे**	**प**	**-**	**म**	**ग**	**मग**	**रे**	**-**	**-**
रा	ज	म	ति	वा	S	म	ति	ना	S	या	ये	वाS	S		S
X				X				X							
रे	**प**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**	**ऩि**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**
न्हाया	ई	पु	से	च्वं	S	गु	थ्व	खे	लय्	S	S	S	S	S	S
रे	**रे**	**म**	**म**	**प**	**-**	**म**	**प**	**नि**	**ध**	**म**	**ध**	**प**	**-**	**-**	**-**
वा	S	रे	यज्	जु	S	म	न	ये	S	चु	के	वा	S	S	S
रे	**प**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**	**ऩि**	**सा**	**गरे**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**
न्हाया	ई	पु	से	च्वं	S	गु	थ्व	खे	लय्	SS	S	S	S	S	S

1. https://youtu.be/mp3m9DiDpR0

अंतरा

-	**साप**	**प**	**प**	**म**	**म**	**ग**	**रे**	**ग**	**सा**	**रे**	**प**	**प**	**-**	**प**	**म**
ऽ	छं	गु	थ्व	ख्वाः	ऽ	या	ऽ	ति	ऽ	बां	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
-	**म**	**धध**	**-ध**	**ध**	**-**	**म**	**रे**	**-**	**रे**	**म**	**नि**	**ध**	**प**	**-**	**-**
ऽ	कुलि	ऽकु	ऽलि	चिं	ऽ	गु	सं	ऽ	झन	बां	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
-	**म**	**म**	**म**	**ग**	**-**	**रे**	**सा**	**सा**	**रे**	**ऩि**	**सा**	**रे**	**-**	**रे**	**सा**
ऽ	बां	ला	ऽ	हे	ऽ	उ	लि	बा	ऽ	न	म	ला	ऽ	ऽ	ऽ
-	**रेम**	**प**	**नि**	**सां**	**सांनि**	**ध**	**प**	**ध**	**ध**	**म**	**ध**	**प**	**-**	**ग**	**रे**
ऽ	गुलि	जक्	क	बां	लाऽ	मि	ख	मि	खा	बां	ऽ	ला	ऽ	हा	ये
ग	**गरे**	**सा**	**ऩि**	**सा**	**-**	**-**	**-**								
मि	खा	बां	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ								
सा	**रे**	**सा**	**ऩि**	**सा**	**-**	**सा**	**रे**	**प**	**-**	**म**	**ग**	**मग**	**रे**	**-**	**-**
य	ऽ	म्हः	तु	यू	ऽ	वा	ऽ	झी	ऽ	त	रे	वाऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	**प**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**	**ऩि**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**
म्ह	ग	से	ऽ	म्हः	ऽ	के	वा	ज्वः	लय्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

5 व छु गल्ली थ्व छु गल्ली[1] ताल – चो (4 मात्रा)

स्थायी

व छु गल्ली थ्व छु गल्ली

मखं त्वा: या गल्ली रे

पानबती मैचां न्हयाना व: गु

जंगीसिया कल्ली रे

अंतरा

- हिसि दु है कलियागु छनछन सल रे

जिगु मन लाका छला वन सुरू सुरू रे

- गाचा जुल पञ्चरंगी धांचा छंगु गुलि रे

1. साक्षात्कार/ नेवारी लोक गायक- श्रेष्ठ भृगुराम/ मिति- 28/05/2016

स्व: लिसे स्वये मगा: गुलि छ नकलि रे

- स्व: थे मस्व: थे च्वंक स्वया च्वनीगु बानी रे

गथ्ये याना लोमंके खनेव न्हिलीगु रे

- गोपिनीया थें छला मुसुमुसु न्हिला रे

घ: ब्यकुं च्याना वल जोवन जोना रे

- अले हानं मिखाय् ज: छुया: छुया: मस्यू रे
  सुं खना मग्याम्ह जि छ खना ग्यात रे

भावार्थ : उपर उल्लेखित गीत 'व छु गल्ली थ्व छु गल्ली' लोक धुन में निबद्ध गीत है जो अत्यंत लोकप्रिय है। इस गीत में काठमांडू के प्रख्यात एवं प्राचीन स्थान 'मखं त्वा' का नाम उल्लेख किया गया है। उसी स्थान में लड़के लोग बैठकर रास्ते में आती जाती लड़कियों को उनका पहनावा, चाल, ढाल का वर्णन करके गीत गाकर मस्ती करने के भाव को गीत में समावेश किया है। यह गीत नेवारी पर्वों में बांसुरी में भी सुनने को मिलता है।

व छु गल्ली थ्व छु गल्ली (ताल- चो, चार मात्रा)

स्थायी

तिं	-	छु	-	तिं	-	छु	-
सा	**सारे**	**ग**	**ग**	**सा**	**सारे**	**ग**	**ग**
व	छुऽ	गल्	ली	थ्व	छुऽ	गल्	ली
X		0		X		0	
-	**रेग**	**-म**	**म**	**ग**	**गरे**	**सा**	**-**
ऽ	मखं	ऽत्वाः	या	गल्	लीऽ	रे	ऽ
सा	**सारे**	**सा**	**ऩि**	**ध़**	**ध़प़**	**म़**	**ग़**
पान	बती	मै	चां	न्हया	नाऽ	वः	गु
-	**गम**	**-प़**	**-ध़**	**ऩि**	**ऩि**	**सा**	**-**
ऽ	जंगी	ऽसि	ऽया	कल्	ली	रे	ऽ

नोट: बाकी के सभी अंतरे स्थायी के समान गाये जायेंगे।

6 वनी नु वनी नु[1] ताल – कहरवा

स्थायी

वनी नु वनी नु तता तकें वनी नु

किजा यात: पुजा याना धलंद्यंक वने नु

वनी नु वनी नु थ: छें वनी नु

किजा यात: पुजा याना धलंद्यंक वने नु

अंतरा

तफो स्वां न: म्वा पले स्वां न: म्वा

किजा यात म्वाकेत: साक्षी च्वम: गोय स्वां माहे मा

हिरा न म्वा: मोती नं म्वा

किजा यात म्वाकेत: साक्षी च्वम: खोसीं माहे मा

लूँयागु न म्वा: वह यागु नं म्वा

किजा यात फेतुइकेत: मण्ड माहे मा

जु ह्मायत कौ मा रथ चित: पौ मा

किजा यात सगं बित धउ है माहे मा

ज्या यायेत बुं मा च्वने त छें मा

किजा यात ल: ल्हायेत खेँ है माहे मा

बं थिला जाके चुंन: मण्ड च्वेहे मा

यम देवयात निमंत्रणा याहे मा

1. Goya Swama Album, Volume - 3

भावार्थ : इस गीत को प्रख्यात नेपाली गायिका लोचन भट्टराई ने गया है। यह पर्व गीत के अंतर्गत आता है। सम्पूर्ण नेपाल में मनाए जाने वाले दीपावली पर्व जिसे सोन्ति नख: कहते है। यह गीत किजापुजा(भाईबीज) पर्व के दिन गाया जाता है। इस गीत में बहन अपने भाई को पूजा करने के लिए ससुराल से मायके घर जाने के लिए तयारी करने की बात कही गई है। उसके बाद मायके घर पहुंचकर भाई को पूजा करने के लिए मंडला बनाकर उसको फूल, फल तथा आवश्यक अन्य चीजों से सजाने की बात इस गीत में सुंदर तरीके से वर्णन की गई है।

वनीनु वनीनु तत्ता तकें

स्थायी

-	**सा**	**ग**	**ग**	**|**	**ग**	**ग**	**ग**	**-**	**|**	**-**	**गप**	**-म**	**-म**	**|**	**प**	**-**	**प**	**म**	**|**
S	व	नी	नु	|	व	नी	नु	S	|	-	तता	त-	-कें	|	व	नी	नु	-	|
-	**निनि**	**-नि**	**-नि**	**|**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**|**	**-**	**मरे**	**-सा**	**नि**	**|**	**सा**	**सा**	**सा**	**-**	**|**
-	किजा	-या	-त	|	पु	जा	या	ना	|	-	धलं	-द्	यंक	|	व	ने	नु	-	|
-	**सा**	**ग**	**ग**	**|**	**ग**	**ग**	**ग**	**-**	**|**	**-**	**गप**	**-म**	**-म**	**|**	**प**	**-**	**प**	**म**	**|**
S	व	नी	नु	|	व	नी	नु	S	|	-	थः	-छैँ	--	|	व	नी	नु	-	|
-	**निनि**	**-नि**	**-नि**	**|**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**|**	**-**	**मरे**	**-सा**	**नि**	**|**	**सा**	**सा**	**सा**	**-**	**|**
-	किजा	-या	-त	|	पु	जा	या	ना	|	-	धलं	-द्	यंक	|	व	ने	नु	-	|

अंतरा

- सारे -प -प | प - - - | प ध -प म | ग - रे - |
- तफ़ो -स्वां -नः | म्वा - - - | प ले -स्वाः न | म्वा - - - |
X
- ऩिऩि -ऩि -ऩि | सा सा सा - | - सासा -रे प | - मरे -सा ऩि |
- किजा -या -त | म्वा के तः - | - साक्षी -च्व ह | - गोय -स्वाः - |

सा सा सा - |
मा हे मा - |

- सारे -प -प | प - - - | प ध -प म | ग - रे - |
- हि- -रा -न | म्वा - - - | मो S -ती नं | म्वा - - - |
- ऩिऩि -ऩि -ऩि | सा सा सा - | - सासा -रे प | - मरे -सा नि |
- किजा -या -त | म्वा के तः - | - साक्षी -च्व ह | - खो- -सीं - |

सा सा सा - |
मा हे मा - |

- सारे -ग -ग | ग ग ग ग | - पम -म -म | ग ग रे - |
- लुँ -या -गु | न - म्वा - | - वह -या -गु | न - म्वा - |
- ऩिऩि -ऩि -ऩि | सा सा रे प | - मरे सा ऩि | सा सा सा - |
- किजा -या -त | फे तुइ के तः | - मण् ड - | मा हे मा - |

7 नारा हिटी दरबार[1] ताल – दादरा

स्थायी

नारा हिटी दरबार लूँयागु मखुला

भिन्तु नांप सिंहदरबार वयागु मखुला

रानी पुखु घण्टाघरे तारंग तुरुङ् मथाला

झिंछता जागु धरहरा स्वर्ग मथिउला

अंतरा

सिद्धि पुखु न्यातचा पौ ख्वप दे मखुला

भू चुक ल्याकु बजार यल दे मखुला

इन्द्र चुक असं बजार यें दे मखुला

हनुमान ढोख्या गछि दनेमः जुजु मखुला

पशुपति गुह्येश्वरी पार्वती मदुला

दक्षिणकाली भाद्रकाली देवी मखुला चल देया भेलुचा पौ देग मखुला

बागमती विष्णुमती तीर्थ मखुला

सिन्धु च्वय खास्ति दुने भगवान मदुला

दक्सें तः जागु सगरमाथा च्वामुगु मखुला

तानोगु चिकुगु मजू थाय नेपा मखुला

---

1. Goya Swama Album, Volume - 2

लं सुरुवा फिपिं भाजु नेपाली मखुला

भावार्थ : यह गीत नेवारी लोक गायक तथा संगीतकार विष्णु जल्मि द्वारा प्रकाशित किए गए 'ग्वे स्वांमा' एल्बम से लिया है। इस गीत में नेवार उपत्यका के प्रचलित स्थान से लेकर सम्पूर्ण नेपाल की पहचान जैसे सगरमाथा हिमाल तक का वर्णन रोचक ढंग से किया गया है। नेपाल उपत्यका के तीनों शहर के प्रमुख स्थल जैसे काठमांडू का राजदरबार, रानी पुखु, घण्टाघर, हनुमान धोखा, पशुपति, बागमती नदी, विष्णुमती नदी उसी प्रकार भक्तपुर का सिद्धि पोखरी, न्यातचा पौ और ललितपुर शहर का भूचक इत्यादि स्थानों का नाम उल्लेख करके नेवारी प्रमुख स्थानों को अवगत कराया है।

नारा हिती दवार (ताल- दादरा)

स्थायी

रे-म	**मम-**	**गग-**	**रेसारे**	**गगग**	**रेसानि**	**सा--**	**---**
भिन्तु	नापं-	सिंह-	दरबार	वयागु	मखु-	ला--	---
सासानि	**सासारे**	**सासासा**	**पपप**	**सासासा**	**रेगग**	**रे--**	**---**
रानी-	पुखु-	घण्टा-	घरे-	तारङ	तुरूङ	मथा-	---
रेरेप	**पपप**	**ममम**	**गसारे**	**गगग**	**रेसानि**	**सा--**	**---**
झिन्धता	जागु-	धर-	हरा-	स्वर्ग-	मथि-	ला--	---
X		X		X		X	

अंतरा

नोट: बाकी के सभी अंतरे स्थायी के समान गाये जायेंगे।

8 यो माँ छंगु गुन या पलसा[1]

स्थायी

यो माँ छंगु गुन या पलसा गबले पुले फैगुले

अंतरा

गुला झिला प्वाथे तया पाँऊं पालु म्हुतु म्हाला

1. Goya Swama Album, Volume - 1

जित छूं जुइ की धैथे अति दु:ख कष्ट नया

खि चो कया लासा लाया चिकन: ब्विका अजलं उइका

चि चि पापा याना थ्यना जित याउक न्हं वेका

दुरु तोंका चुपा नया अति प्रेम हिरा धया

जित छूं जुल की धका अजी केना जाकी होला

भावार्थ : इस गीत में माँ की ममता, उनका बच्चों प्रति लाड़ प्यार के बारे में वर्णन किया है। अपनी माँ के इस अपार प्यार के ऋण को केसे चुका पाउंगा, इस भाव को और अपनी माँ के प्रति प्यार भरी भावना को इस गीत में दर्शाया गया है। इस गीत को नेवारी लोक गायक तथा संगीतकार विष्णु जल्मि द्वारा प्रकाशित 'ग्वे स्वांमा' एल्बम से लिया है।

यो माँ छंगु गुन या पलसा

स्थायी

-	**-**	**ग**	**-**	**|**	**रे**	**प**	**-**	**म**	**|**	**ग**	**-**	**ग**	**रे**	**|**	**सा**	**ऩि**	**सा**	**-**	**|**
		यो	-	|	माँ	छं	-	गु	|	गु	-	न	या	|	प	ल	सा	-	|
X					0					X					0				
-	**-**	**सा**	**-**	**|**	**ग**	**ग**	**-**	**सा**	**|**	**ग**	**-**	**म**	**-**	**|**	**प**	**-**	**-**	**-**	**|**
		गु	ब	|	ले	पु	-	ले	|	फै	-	गु	-	|	ले	-	-	-	|
-	**-**	**प**	**प**	**|**	**सां**	**सां**	**-**	**सां**	**|**	**नि**	**नि**	**सां**	**<u>नि</u>**	**|**	**ध**	**प**	**-**	**-**	**|**
		गु	ब	|	ले	पु	-	ले	|	-	फै	-	गु	|	-	यो	-	माँ	|
-	**-**	**ध**	**प**	**|**	**ध**	**म**	**म**	**ग**	**|**	**रें**	**ग**	**-**	**म**	**|**	**म**	**प**	**-**	**-**	**|**
		गु	ब	|	ले	पु	-	ले	|	-	फै	-	गु	|	ले	-	-	-	|

9 याकन याकन वा पिनु[1] ताल – कहरवा

स्थायी

- याकन याकन वा पिनु बुईं ज्याक

ब्यकुं मिखां छं स्वयेमते ख्वा स्यंक

प्याचा निपुचा य: मै म्हाइपु म्हिपु छखे छ्व

जायके खोलाचा

- ल्हों छं खोल्हाये तोम्ह छ ए दाइचा

झंग लाइ स्व चलाख म्ह: सुलि मैचां

प्याचा निपुचा य: मै म्हाइपु म्हिपु छखे छ्व

जायके खोलाचा

अंतरा

- सुलि मैचिया स गुलि नाइसे च्वं

झंग लाइम व: मखु छ हे थे च्वं

प्याचा निपुचा य: मै म्हाइपु म्हिपु छखे छ्व

जायके खोलाचा

- छंत झंग लाना द छु दै स्व:
  गुगु ल: पर्का क्यं न्हुगु छजुगु

प्याचा निपुचा य: मै म्हाइपु म्हिपु छखे छ्व

जायके खोलाचा

1. https://youtu.be/uUI94FXBEmo

भावार्थ : यह विष्णु सक्क द्वारा रचित फिल्म 'माया रे रत्न' का गीत है। यह प्रेम गीत है जिसमें आषाढ़ महीने में धान की खेती में प्रयोग किया जाने वाला 'प्वाचा'(प्लांट) शब्द को लेकर पूरे गीत को रोमाञ्चक ढंग से लिखा गया है। नेवारी जाति का मुख्य पेशा खेती है इसलिए यह जाति खेत में काम करने के लिए मादिरा सेवन करती है, इसी विषय का भी गाने में वर्णन किया गया है और काम के दौरान मज़ाक मस्ती करने की बात का भी वर्णन प्राप्त होता है। यह शृंगार-रस प्रधान गीत वर्तमान समय में अत्यंत प्रचलित है।

याकनं याकनं वापि नु (ताल- कहरवा)

स्थायी

सा	**रे**	**म**	**ग**	**।**	**रे**	**रे**	**-**	**ग**	**।**	**रे**	**-**	**सा**	**-**	**।**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**।**
याक	नं	याक	नं	।	वा	पि	S	नु	।	बुंई	S	ज्याः	S	।	क	S	S	S	।
प	**ध**	**सां**	**नि**	**।**	**ध**	**ध**	**-**	**नि**	**।**	**ध**	**-**	**प**	**-**	**।**	**प**	**-**	**-**	**-**	**।**
व्य	कुं	मि	खां	।	छं	स्वये	म	ते	।	ख्वा	S	स्यं	S	।	क	S	S	S	।
प	**-ध**	**सां**	**सां**	**।**	**नि**	**-**	**ध**	**प**	**।**	**-**	**पध**	**प**	**म**	**।**	**ग**	**रे**	**-**	**ग**	**।**
प्वा	Sचा	नि	पु	।	चा	S	यः	मै	।	S	म्हा	पु	म्हिपु	।	छ	खे	S	छ्व	।
म	**ग**	**रे**	**सा**	**।**	**सा**	**-**	**-**	**-**	**।**										
जाय	के	खो	ला	।	चा	S	S	S	।										

नोट: प्रत्येक चरण इसी स्वरलिपि में गाए जाएंगे

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में नेवारी संगीत की वर्तमान समय की स्थिति तथा जनमानस में इस संगीत प्रति लगाव को जानने का प्रयास किया गया है। जिसके लिए शोधार्थिनी ने नेवारी संगीतज्ञों के साथ प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर और गहराई से शोध विषय को जानने का प्रयास किया गया है। साथ में जनमानस में नेवारी संगीत का प्रभाव एवं प्रसिद्धि को जानने का प्रयास किया गया है।